Introduction

::: - प्राक्कथन - :::

प्रत्येक प्रदेश में लोक-साहित्य का निजी महत्व है । लोक की इस अनमोल निधि को कई विद्वानों ने परखने एवं उसका मूल्यांकन करने की चेष्टा की है । परिणामस्वरूप हमें कई प्रदेशों के लोक-साहित्य से संबंधित शोध-प्रबंध देखने को मिले हैं । अस्तु ।

मुझे बाल्यकाल से ही गुजरात के मुख्य नगर बड़ौदा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । मेरी शिक्षा दीक्षा पूर्णत: बड़ौदा में ही हुई । प्रारम्भिक शिक्षा आर्यकन्या महाविद्यालय में और विश्वविद्यालय की शिक्षा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में हुई । गुजरात के शिक्षित और सांस्कृतिक वातावरण को मैंने सम्पूर्ण रूप से अंगीकृत किया है । बड़ौदा गुजरात की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रसिद्ध है । मैंने बाल्यकाल से ही अब तक गुजरात के गीत, संगीत, नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप में भाग लिया है । गुजरात के सांस्कृतिक वैभव से मैं परिचित ही नहीं पूर्ण रूपेण प्रभावित भी हूँ ।

समय समय पर मुझे राजस्थान में भी जाने का सुअवसर मिलता रहा है । राजस्थान में जाने पर मैं सदा ही देखती रही कि गुजरात की भांति यहां भी गीत, नृत्य आदि की प्राचीन परम्परायें किसी न किसी रूप में जीवित हैं । गुजरात जैसा विकसित रूप यद्यपि इन्हें नहीं मिल सका । राजस्थान में लोकगीत, लोकनृत्य आदि वस्तुत: उपेक्षित अवस्था में हैं और तीव्रता से विलुप्त होते जा रहे हैं । राजस्थान जैसे विस्तृत क्षेत्र में लोकगीतादि की समृद्ध परम्पराओं के संरक्षण के लिये तथाकथित संस्थायें नाममात्र के ही प्रयत्न कर रही हैं । राजस्थान की इस प्रकार की दयनीय स्थिति को देखते हुये मुझे हार्दिक वेदना होती रही और मैंने निश्चय किया कि राजस्थान की इस सांस्कृतिक निधि को प्रकाश में लाने का कोई विनम्र प्रयत्न करूं ।

लगभग चार वर्ष पूर्व जोधपुर जाने पर मुझे ज्ञात हुआ कि राजस्थान प्राच्य - विद्या प्रतिष्ठान के उपनिर्देशक डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने श्री झवेरचन्द मेघाणी, राहुल सांकृत्यायन, रामनरेश त्रिपाठी और डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे विद्वानों की प्रेरणा से अपने निजी प्रयत्नों द्वारा सारे राजस्थान से लगभग दस हजार लोकगीतों का संग्रह किया है । इस संग्रह से मुझे कतिपय श्रृंगारिक लोकगीत भी मिल गये किन्तु मेरे कार्य के लिये बहुत कम थे । बड़ौदा जाने पर मैंने आदरणीया प्राध्यापिका डॉ० प्रेमलता बाफनाजी से इस सम्बन्ध में चर्चा की । इन्होंने मुझे प्रेरणा दी कि मुझे राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों का सर्वेक्षण, संग्रह और अनुशीलन संबंधी कार्य करना चाहिये जिससे राजस्थान का सांस्कृतिक वैभव किसी सीमा तक उजागर हो सके । यह विषय विश्वविद्यालय द्वारा पी०एच०डी उपाधि के लिये स्वीकृत कर लिया गया तब मैंने राजस्थान की अनेक दीर्घ-कालीन यात्रायें की, अनेकों गांवों में घूम घूम कर संबंधित गीत-गायकों से सम्पर्क किया, गीत प्राप्त किये, गीतों को समझा । लगातार प्रयत्न करने पर मुझे लगभग पांच सौ श्रृंगारी गीत प्राप्त हो सके । इन गीतों में से मैंने अपने आलोच्य विषय के लिये प्रतिनिधि गीतों का चयन किया ।

तदुपरान्त अपनी आदरणीया प्राध्यापिका जी के निर्देशन में अध्ययन और लेखन कार्य आरम्भ किया । समय समय पर अनेक कठिनाइयां आती रही किन्तु आदरणीया बाफना जी के कृपा पूर्ण सहयोग से मैं यह कार्य पूर्ण कर सकी । आदरणीय डॉ० मदनगोपालजी गुप्त अध्यक्ष हिन्दी विभाग महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय का इस कार्य हेतु मार्गदर्शन भी मुझे प्राप्त होता रहा । मैं उक्त दोनो ही गुरुजनों की आभारी हूँ ।

इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करने में अनेक सज्जनों से सहायता मिली है, जिनके प्रति आभार प्रदर्शित करना मेरा पुनीत कर्तव्य है । डा० सोहनदानजी

चारण (प्राध्यापक जोधपुर विश्वविद्यालय) ने विषय से संबंधित पुस्तकें बताकर मुझे उपकृत किया । श्री ओमदत्तजी कछवाहा, श्री गणपत भाटी और श्री सोनीजी ने इस कार्य में पर्याप्त सहायता पहुंचायी । इन सभी सज्जनों की मैं हृदय से आभारी हूँ ।

समय समय पर सारे काम काज छोड़कर यथायोग्य सहायता करने वाले तथा शोध प्रबंध लिखने के लिये सदैव प्रेरित करने वाले श्री पूज्य डाह्याभाई पटेल के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन हेतु मेरे पास शब्द नहीं है ।

इसके अतिरिक्त जिन विद्वानों से परोक्ष-अपरोक्ष रूप में इस शोध-प्रबन्ध को तैयार करने में सहायता मिली है, उन सबके प्रति मैं विनत हूँ । सम्पूर्ण लोक के उपकार से तो मैं दबी हुई हूँ ही । सोचती हूँ कि लोक-साहित्य से संबंधित यह कार्य करके कुछ तो उऋण हुई हूँ ।

विनीता

श्यामा कछवाहा